ना आसमान गिरा, ना चाँद बौखलाया

(जमुना, बच्चों के सवाल और कक्षा में गणतंत्र का अभ्यास)

फील्ड-स्तर का दृष्टिकोण

लेखक: अरविन्द कुमार सिंह, प्राथमिक विद्यालय सहायक अध्यापक, बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश

प्रो. कृष्ण कुमार के शब्दों में —
"लोकतंत्र केवल पाठ्यपुस्तकों में पढ़ाया जाने वाला विषय नहीं है; उसे कक्षा के रोज़मर्रा के व्यवहार में जिया जाना चाहिए।"

भूमिका : कक्षा से दीवार तक—लोकतंत्र का अभ्यास

वर्ष 2026 में प्रवेश करते ही हम अपने 77वें गणतंत्र की ओर अग्रसर हैं। इस अवसर पर प्रस्तुत दीवार पत्रिका का विशेषांक "न आसमान गिरा, न चाँद बौखलाया" हमारे देश के गणतंत्र को समर्पित है।
यह अंक केवल एक लेखन गतिविधि नहीं, बल्कि शिक्षा को बच्चों के जीवन, अनुभवों और सामाजिक यथार्थ से जोड़ने का एक सार्थक प्रयास है। यह विशेषांक बच्चों की जिज्ञासा, असहमति, भय, प्रश्न, अनुभव और साहस को स्वर देता है।
यह दीवार पत्रिका संविधान में निहित समानता, स्वतंत्रता, गरिमा और न्याय के मूल्यों को बच्चों की अपनी भाषा और अनुभवों के माध्यम से समझने का अवसर प्रदान करती है। गणतंत्र केवल एक तिथि या उत्सव नहीं है; यह विवेकपूर्ण सोच, प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता और समान अवसरों की चेतना है। यही चेतना इस दीवार पत्रिका के हर लेख, हर चित्र और हर संवाद में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

पुस्तक से प्रेरणा : 'न आसमान गिरा, न चाँद बौखलाया'

दीवार पत्रिका का यह अंक महीन मिर्ज़ा द्वारा रचित पुस्तक "न आसमान गिरा, न चाँद बौखलाया" से प्रेरित है।

यह कहानी जमुना नामक एक लड़की की है, जो अपने परिवार और समुदाय की रूढ़ मान्यताओं के बीच अपने अधिकार, क्षमता और स्वप्न को पहचानती है।

चाक न चलाने का नियम—जो केवल लड़कियों पर लागू है—एक ऐसा सामाजिक प्रतिबंध है, जो तर्क या नैतिकता पर नहीं, बल्कि अंधविश्वास और लैंगिक भेदभाव पर आधारित है।
जमुना का रात में चुपचाप चाक चलाना किसी से टकराव नहीं, बल्कि विवेक का शांत प्रयोग है। वह अनुभव करती है कि नियम टूटने से न तो आसमान गिरता है, न चाँद बौखलाता है। यह अनुभव उसे यह समझने में मदद करता है कि जो नियम समानता और तर्क के विरुद्ध हैं, उन्हें पुनः देखने की आवश्यकता है।
यही समझ गणतंत्र की आत्मा है—बिना हिंसा, बिना अपमान, प्रश्न करने का साहस।

दीवार पत्रिका का सौंदर्य और उसके प्रतीक

दीवार पत्रिका को बच्चों ने सामूहिक रूप से सजाया—काग़ज़ से कटे सितारे, एक बड़ा चाँद जिस पर लिखा है “उड़ान”, स्केच पेन से बनाए छोटे-छोटे सितारे तथा स्प्रे पेंटिंग से बनाए गए लाल सितारे और धूसर बादल।

- **‘उड़ान’ लिखा चाँद** बच्चों की आकांक्षाओं, स्वतंत्र सोच और भविष्य की संभावनाओं का प्रतीक है।
- **सितारे** प्रत्येक बच्चे की विशिष्ट पहचान और अंतर्निहित क्षमता को दर्शाते हैं।
- **धूसर बादल** समाज में व्याप्त रूढ़िवादी सोच, भय और अंधविश्वास का संकेत देते हैं, जिनके बीच बच्चे अपनी रोशनी खोज रहे हैं।
-

यह सौंदर्यात्मक प्रस्तुति केवल सजावट नहीं, बल्कि **दृश्य साक्षरता** (Visual Literacy) का एक सशक्त उदाहरण है, जो **NEP 2020** में **वर्णित बहु-संवेदी एवं कला-एकीकृत अधिगम** (Multisensory & Art Integrated Learning) की अवधारणा से सीधे जुड़ती है।

बच्चों के लेख : अनुभव से ज्ञान की ओर

इस दीवार पत्रिका का सबसे सशक्त पक्ष बच्चों का मौलिक लेखन है। ये लेख **FLN (Foundational Literacy and Numeracy)** के तीनों आयाम—पढ़ना, लिखना और समझना—को स्वाभाविक रूप से विकसित करते हैं।

1. जमुना का साक्षात्कार’ : प्रश्न पूछने का साहस

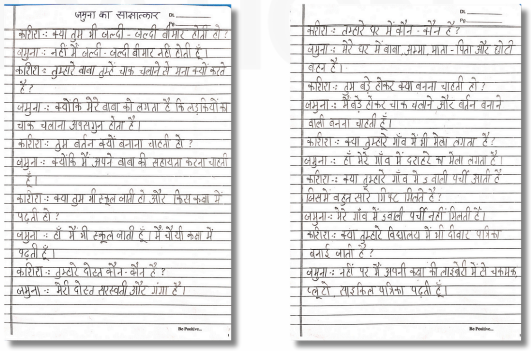

यह लेख बच्चों की संवाद क्षमता, प्रश्न निर्माण और तर्कशील सोच को उजागर करता है।
कशिश द्वारा पूछा गया प्रश्न—

> **“सारे काम करने से लड़कियों को ही क्यों मना किया जाता है?”**

सीधे-सीधे लैंगिक समानता और सामाजिक न्याय से जुड़ा है। यह लेख **आलोचनात्मक साक्षरता** (Critical Literacy) का उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ बच्चा पाठ से आगे बढ़कर समाज को पढ़ने लगता है।

जमुना का साक्षात्कार
कशिश : क्या तुम भी जल्दी-जल्दी बीमार होती हो?
जमुना : नहीं मैं जल्दी-जल्दी बीमार नहीं होती हूँ।
कशिश : तुम्हारे बाबा तुम्हें चाक चलाने से मना क्यों करते हैं?
जमुना : क्योंकि मेरे बाबा को लगता है कि लड़कियों का चाक चलाना अपसगुन होता है।
कशिश : तुम बर्तन क्यों बनाना चाहती हो?
जमुना : क्योंकि मैं अपने बाबा की सहायता करना चाहती हूँ।
कशिश : क्या तुम भी स्कूल जाती हो और किस कक्षा में पढ़ती हो?
जमुना : हाँ मैं भी स्कूल जाती हूँ। मैं चौथी कक्षा में पढ़ती हूँ।
कशिश : तुम्हारे दोस्त कौन-कौन हैं?
जमुना : मेरी दोस्त सरस्वती और गंगा हैं।
Be Positive...

कशिश : तुम्हारे घर में कौन-कौन है?
जमुना : मेरे घर में बाबा, अम्मा, माता-पिता और छोटी बहन है।
कशिश : तुम बड़े होकर क्या बनना चाहती हो?
जमुना : मैं बड़े होकर चाक चलाने और बर्तन बनाने वाली बनना चाहती हूँ।
कशिश : क्या तुम्हारे गाँव में भी मेला लगता है?
जमुना : हाँ मेरे गाँव में दशहरे का मेला लगता है।
कशिश : क्या तुम्हारे गाँव में 5 वाली पर्ची आती है जिसमें बहुत सारे गिफ्ट मिलते हैं?
जमुना : मेरे गाँव में 5 वाली पर्ची नहीं मिलती है।
कशिश : क्या तुम्हारे विद्यालय में भी दीवार पत्रिका बनाई जाती है?
जमुना : नहीं पर मैं अपनी कक्षा की लाइब्रेरी में से चकमक, प्लूटो, साइकिल पत्रिका पढ़ती हूँ।
Be Positive...

2. ‘पुरानी बातें’: आंतरिक द्वंद्व और आत्मचिंतन

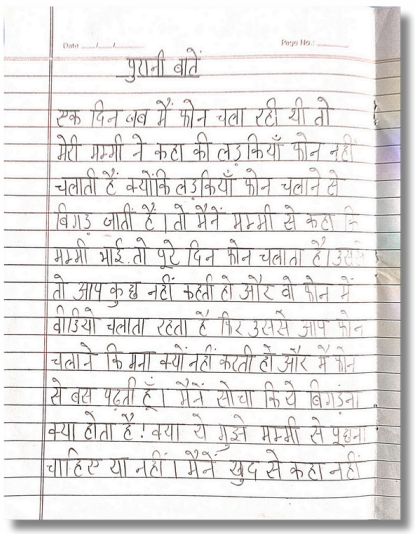

फोन के उपयोग को लेकर लड़का–लड़की के भेद पर लिखा यह लेख बच्चे के मन में चल रहे द्वंद्व को उजागर करता है। बच्ची प्रश्न करती है और फिर स्वयं से संवाद करती है।
यह लेख दर्शाता है कि बच्चे केवल आज्ञाकारी नहीं, बल्कि सोचने वाले नागरिक हैं। आत्मसंवाद और आत्मचिंतन **NEP 2020** में वर्णित Reflective Learning की बुनियाद है।

पुरानी बातें
एक दिन जब मैं फोन चला रही थी तो मेरी मम्मी ने कहा की लड़कियाँ फोन नहीं चलाती हैं क्योंकि लड़कियाँ फोन चलाने से बिगड़ जाती हैं। तो मैंने मम्मी से कहा कि मम्मी भाई तो पूरे दिन फोन चलाता है उसे तो आप कुछ नहीं कहती हो और वो फोन में वीडियो चलाता रहता है फिर उससे आप फोन चलाने को मना क्यों नहीं करती हो और मैं फोन से बस पढ़ती हूँ। मैंने सोचा कि ये बिगड़ना क्या होता है! क्या ये मुझे मम्मी से पूछना चाहिए या नहीं। मैंने खुद से कहा नहीं

3. रोटी का रोल' : घरेलू हिंसा और बच्चे

यह लेख अत्यंत संवेदनशील सामाजिक यथार्थ को सामने लाता है। शराब, घरेलू हिंसा और भय के बीच बच्चों की मनःस्थिति को शब्द मिलते हैं।

यह लेख यह भी दर्शाता है कि यदि विद्यालय सुरक्षित अभिव्यक्ति का स्थान बने, तो बच्चे अपने कठिन अनुभवों को भी साझा कर सकते हैं। यह **सामाजिक–भावनात्मक अधिगम** (SEL) का एक महत्वपूर्ण पक्ष है।

4. 'पकड़' और 'मेरी मम्मी ने डरा दिया' : डर, सुरक्षा और स्वतंत्रता

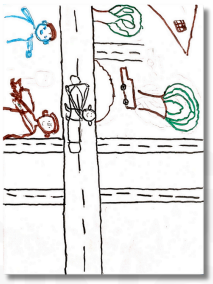

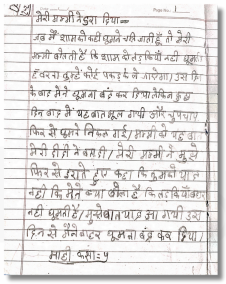

इन लेखों में बच्चों का भय स्पष्ट रूप से उभरता है—अपहरण, शाम को बाहर न जाना और डराकर अनुशासन।
ये लेख यह प्रश्न उठाते हैं कि सुरक्षा के नाम पर डर किस प्रकार बच्चों की स्वतंत्रता और आत्मविश्वास को सीमित करता है। गणतंत्र की दृष्टि से यह **सुरक्षा और स्वतंत्रता के संतुलन** का महत्वपूर्ण विमर्श है।

5. 'मोमोज', 'पेट में दर्द', 'कैंची' : अंधविश्वास और वैज्ञानिक सोच

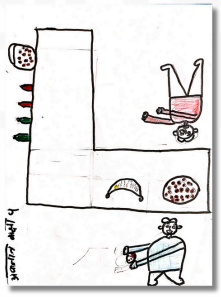

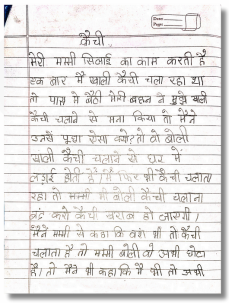

इन लेखों में घरेलू नियम, अंधविश्वास और दंडात्मक व्यवहार सामने आते हैं। बच्चे कारण–परिणाम को समझने का प्रयास करते हैं।
यही **वैज्ञानिक दृष्टिकोण** (Scientific Temper) है, जिसे भारतीय संविधान में नागरिकों का कर्तव्य माना गया है।

दीवार पत्रिका : FLN और NEP 2020 के उद्देश्यों की सजीव कक्षा

इस अंक के माध्यम से **FLN** और **NEP 2020** के अनेक मूल उद्देश्यों पर एक साथ कार्य होता हुआ स्पष्ट दिखाई देता है।
FLN के अंतर्गत बच्चों की अर्थपूर्ण साक्षरता का विकास हुआ, जहाँ पढ़ना–लिखना केवल अक्षर-ज्ञान तक सीमित न रहकर अनुभवों की अभिव्यक्ति, भावनाओं की अभिवाचन और विचारों के संप्रेषण का माध्यम बना।
वहीं **NEP 2020** के संदर्भ में यह दीवार पत्रिका अनुभवात्मक अधिगम, स्थानीय संदर्भों का उपयोग, बहुभाषिक अभिव्यक्ति, आलोचनात्मक सोच तथा कला-एकीकृत शिक्षा को व्यवहार में उतारती है।
लेखन, चित्र, संवाद और सामूहिक सज्जा के माध्यम से सहयोग, सृजनात्मकता और लोकतांत्रिक सहभागिता को बढ़ावा मिला। इस प्रकार दीवार पत्रिका एक ऐसी कक्षा-प्रक्रिया के रूप में उभरती है, जहाँ नीतिगत लक्ष्य बच्चों के अनुभव और सीख में साकार होते दिखाई देते हैं।

गणतंत्र की आत्मा और बच्चे

गणतंत्र का अर्थ है—

- नियम सबके लिए समान
- प्रश्न पूछने का अधिकार
- असहमति के लिए स्थान
- समान अवसर

जमुना का चाक चलाना, कशिश का सवाल, माही का डर और संध्या की पीड़ा—ये सभी गणतंत्र की जीवंत कक्षाएँ हैं।

निष्कर्ष

बच्चों के लेख हमें बताते हैं कि जब बच्चों को बोलने, लिखने और सोचने की स्वतंत्रता दी जाती है, तब शिक्षा केवल सूचना नहीं, बल्कि नागरिकता का निर्माण बन जाती है। यह अंक बच्चों की आवाज़, संविधान के मूल्यों और शिक्षा के मानवीय उद्देश्य का सशक्त संगम है। यह हमें यह भी याद दिलाता है कि — जब बच्चे प्रश्न पूछते हैं, तो न आसमान गिरता है, न चाँद बौखलाता है।

जमुना रूढ़िवादी समाज से टकराव की इस यात्रा में अकेली नहीं जमुना का साथ देने के लिए कशिश, साक्षी, नैना, हिमांशु, देवराज भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से साझीदार है। उनके प्रश्न उन्हें दिन-ब-दिन और अधिक सीखने के लिए प्रेरित कर रहे हैं आशा है कि उन्हें **धीरे-धीरे अपने सभी प्रश्नों के जवाब मिल जाएंगे।** सीखने सिखाने की यह यात्रा आगे भी गतिमान रहेगी।

दीवार पत्रिका:
https://drive.google.com/file/d/1MTzLd9lZhwd45CnnmiEo2ApV3WjxgjRI/view?usp=sharing

लेखक परिचय:
अरविन्द कुमार सिंह के प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी जनपद बुलंदशहर उत्तर प्रदेश में पिछले 9 वर्षों से सहायक अध्यापक के पद पर कार्यरत है। अरविन्द कुमार सिंह LLF के नौ माह कोर्स के पूर्व प्रतिभागी भी है। इसके साथ ही उनके विद्यालय के छात्र-छात्राएं पिछले 3 वर्षों से उड़ान नाम की दीवार पत्रिका बना रहे हैं साथ ही छात्र-छात्राओं के लिखे कविता, कहानी, चित्र और लेख बाल विज्ञान पत्रिका चकमक में लगातार प्रकाशित होते रहते हैं। इनके विद्यालय के छात्रों द्वारा बनाया गया टाइमलाइन कैलेंडर को SCERT राजस्थान द्वारा प्रकाशित की जाने वाली हवा महल पत्रिका में चुका है। इनके कक्षा अनुभव लगातार विभिन्न पत्रिका एवं वेबपोर्टल पर प्रकाशित होते रहते है।